रात्रि क्लास 20/7/1965 पिताश्री

सर्विस सहज ते सहज भी है, डिफीकल्ट से डिफीकल्ट भी है। एक बाप को पूरा न याद करने से पूरा खुशी का पारा न चढ़ता है। अज्ञान काल में ... गरीब का एडॉप्ट करे तो उनको खुशी का पारा चढ़ जाय। यहाँ बेहद का बाप एडॉप्ट करते ..... खुशी का पारा न चढ़ता है। हम बेहद के बाप की संतान हैं। इन्होंने एडॉप्ट किया है। परमपिता कहने से खुशी चढ़ जाना चाहिए; परन्तु माया ऐसी है जो पता है परमपिता कहते हैं ..... हो जाती है। नहीं तो गरीब को साहुकार एडॉप्ट करे तो कब फारकती न दे। यहाँ ..... भी करते हैं। स्वर्ग का वर्सा मिलता है फिर भी छोड़ देते हैं। राम का बन 8/10 बरस पढ़ ..... कर रावण के बनते हैं। ये भी एक वण्डर है। हिम्मत नहीं रहती याद करने की। लिखा–पढ़ी भी बहुत करते, सर्विस भी बहुत अच्छी करते हुए फिर भी माया से हराय देते हैं। क्या माया ऐसी जादूगरनी है। बाप कहते हैं मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। बाप बच्चों से सब कार्य कराते हैं। बाप आते हैं शुभ कार्य करने। रावण अशुभ कार्य करते। तुम जानते हो दुनिया रावण तरफ है। तुम राम की तरफ हो। राम शुभ ही कराते हैं। समझ होना चाहिए मैं कर्तव्य शुभ करता हूँ या अशुभ? मिसाल के लिए चित्र सामने रखे हैं। सतयुग में कब इन्हों से अशुभ कार्य नहीं होते। किसको भी दुख न देना, अशुभ कार्य न करना है। इनसे विकर्म बन जाते। फिर दरकार ही क्या है? दिल भी अन्दर खाती है। मैं अशुभ कार्य करती हूँ, फिर भी अपने ऊपर ग्लानि नहीं होती है कि हम स्वर्ग के मालिक कैसे बनेंगे; क्योंकि अपन को 21 जन्म लिए घाटा लगाती हूँ। रो–रोकर क्षमा माँगती चाहिए– बाबा, हम कब न करेंगे। बाबा कहेंगे, तुम अपना ही खाना खराब करते हो। अपन को फायदा डाला, घाटा डाला, कल्प–कल्पांतर का बन जाता है। बाबा को बताने से मदद मिलती है। सच्चे दिल पर साहब राजी होती है। मार्ग इतना अच्छा सहज है, किसको दुख देने की दरकार न है। तुम सुखधाम का मार्ग बताते रहो प्रेम से।

बच्चों को .....

..बसंत है। मुख से रत्न ही निकलते रहेंगे। ..... ग्लानि करना ... पत्थर निकालना। बाबा के लिए कोई (कहे), हमको दुख दिया, तकलीफ ..... कर दिखाय। कब भी नहीं। जानते भी हैं इससे .....याँ होती हैं तो भी कहता नहीं हूँ, मुरली में समझाय देता हूँ। बाबा समझते हैं बदला ले(ने) देरी नहीं करते, और ही डिससर्विस करेंगे। ऐसा चांस क्यों देवें जो उल्टी–सुल्टी बात बतलाय किसी का अकल्याण न कर दे। हमेशा मीठा ही बोलता हूँ। जैसे कर्म मैं करता हूँ, तुम भी करते रहो। कोई गुस्सा करे तुम शांत ... रहो। कोई के पिछाड़ी चटकना भी न है। कह देना चाहिए, टाइम नहीं है, कोई और समय आना। तुम्हारे इस समय आने का मुहुरत न है। तुम सब बी०के० डाडे से वर्सा ले रही हो। तुम भी (आ)कर वर्सा लो। रग देखनी चाहिए। तुम रूहानी सर्जन हो ना। रग देखने की भी समझ चाहिए। प्रैक्टिस अच्छी चाहिए। आजकल दुनिया में गंदे बहुत हैं। छोड़ते किसको भी नहीं हैं। सामान चोरी कर देते, खून कर देते। बहुत बच्चों की दिल भी होती है जल्दी जावें अपनी राजधानी (में); परन्तु अभी पूरा काम हुआ कहाँ है! इतने अजुन बने कहाँ हैं! सूर्यवंशी, चंद्रवंशी, (धीरे–2) झाड़ वृद्धि को पाता है। वो तो एक ही भाषण से कितने बौद्धी बनाय देते हैं। यहाँ तो कि(तनी) मेहनत करनी होती है मनुष्य को देवता बनाने में। पिछाड़ी का खूनेनाहक खेल ..... खौफनाक है। तुम आपस में बहलते रहेंगे, ये फलाना राजा बनेगा। खुशी में रहेंगे ..... हाय–2 करती रहेगी। बहुत–2 दुख का समय होता है। तुम फरिश्ते मौज करते (र)हेंगे। आसुरी सम्प्रदाय मच्छरों माफिक मरते रहेंगे। उस समय के लिए अवस्था बहुत ..... चाहिए जो हम ठहर सकें। महाकाल के तुम बच्चे हो ना। अकालमूर्त। ये है अकाल त(ख्त)। शरीर में निवास कर वर्सा देते हैं। मनुष्य ऐसे नहीं कहते, कृष्ण के तन में भगवान..... कृष्ण भगवानुवाच्य कहते। यहाँ है शिव भगवान

(अधूरी मुरली)